मैथिली (प्रतिष्ठा)
बी० ए० (H) पार्ट-03
पेपर- 08

डॉ. बसंत कुमार
अतिथि शिक्षक
दिनांक - 03.08.21

## प्रकरण - पुरुष परीक्षा

तत्र जाग्रदेव पुनः प्रातरागत्य दौवारिकैः प्रबोधितः सौवर्णमायतनं पूर्ववदेव द्वारि दृष्ट्वा कृतार्थो बभूव।

आकाश-सरस्वत्याः प्रकरणबलेनार्थ ज्ञातवान् विक्रमादित्यप्रसादा न्मम पुनरर्मरणायासनिरपेक्षा सिद्धिरियं जातेतति। निर्धारितमप्यर्थं तस्य संसदि वैतालिक समागत्य पुनरुक्तं चकार।

परञ्च निद्रा नहि भेलानि। जागल-जागल करोटे नहि लेल तइयो द्वारपाल प्रात आबि जगाओल। सोनक मन्दिर पहिल जकाँ द्वारिपर देखि ओ (राजा बलाह) कृतार्थ भेलाह। प्रसंगसँ आकाशवाणीक अर्थ आब बुझबामे अयलनि जे विक्रमादित्यक प्रसादसँ हमरा से सिद्धि भेटल अछिसैँ बारंबार मरणक आयास प्रयासक अपेक्षा नहि रहल। हुनक एहि निर्धारित विषयकेँ वैतालिक सभामे आबि कए पुनः दोहरा क' कहल।